

त्राश्रमे 63, 9. RĀGA-TAR. 1, 180. विख्याताः कवयो वसन्ति विषये यस्य प्रमेनिर्धनाः Spr. 2980. वसन्ति ये तामलिष्याम् so v. a. *die Bewohner von Tām. Varāṇ. Brh. S. 10, 14. KATHĀS. 30, 95. 31, 22. मध्ये लालितकादीनां दुर्वृत्तानां वसन्ति* — दुःसंस्काराव स्मे ऽग्रहीत् RĀGA-TAR. 5, 228. DAÇAK. 66, 17. 76, 6 (lies *अवात्सम्* sl. *अवात्सम्*). PAKĀT. 68, 24. Vet. in LA. (III) 6, 20. 7, 6. med. MBH. 1, 4583. 2, 609. 2502. 2872. 3, 11658. 4, 13. विराधनगरे वत्स्यसे केन कर्मणा 19. 3, 3823. 13, 720. 5219. 14, 457. HARIV. 6017. R. 1, 28, 8. 50, 4. 2, 34, 43. 48, 21. 32, 27. 3, 75, 12. Verz. d. Oxf. H. 32, b, 32. Bhāg. P. 1, 17, 37. SADDH. P. 4, 10, a. pass. impers.: इहोष्यतां वत्से यावते भर्तुरागमः Bhāg. P. 7, 7, 12. 9, 13, 11. 20, 14. PAKĀT. 30, 24. तस्मिन्वापे स भगवानुषिवा परिवत्सरम् M. 1, 12. Spr. 1142. उष्ट्र मदात्सगर्भे MĀRK. P. 44, 13. उष्य तत्र यथाकामम् MBH. 3, 2232. 3030. 8032. R. 2, 52, 78. गमिष्यामि वनं वस्तुमहं वितः 19, 2. आसौ सपत्नीनां वस्तुं मध्ये न मे क्षमम् 24, 17. 35, 11. 37, 18. 3, 52, 37. 53, 23. अतः संप्रति गच्छावो वस्तुमुज्जयिनो पुरीम् KATHĀS. 24, 85. 18, 376. दिवसेनैव तत्कुर्याद्येन रात्रौ सुखं वसेत् ॥ अष्टमासेन तत्कुर्याद्येन वर्षाः सुखं वसेत् ॥ *sich behaglich betten, behaglich leben* Spr. 4182. येन वृद्धः सुखं वसेत्, येनामुत्र सुखं वसेत् 4570. 4863. M. 6, 95. अस्मान् उवास कच्छम् Bhāg. P. 9, 10, 9. नाहं कम्पडला-वस्मिन्कच्छं वस्तुमिहोत्सहे spricht ein herangewachsener Fisch 8, 24, 18. *beiwohnen, geschlechtlichen Umgang haben mit* (loc.): वियोगिषु च वत्स्यति (चरिष्यति die neuere Ausg.) प्रमदासु नरास्तथा HARIV. 11167. *seinen Standort haben, von Thieren: यत्रोदकं तत्र वसति कसाः* Spr. 4776. मूले वसति चेत्यपि 2210. 3198. Gīt. 1, 47. KATHĀS. 33, 44. चत्वारः प्राणिनस्तत्र वसन्ति स्म मृकतौ 107. Hit. 14, 18, v. l. कृस्तिनो लब्ध-नामानस्तुरंगास्तु मनोज्ञाः । गृहोपकण्ठे नृपतेर्वसेयुः स्वाप्तरजिताः ॥ KĀM. NĪTIS. 16, 8. *bleiben so v. a. nicht fortgehen* Spr. 3673. अथ यं पातारश्चि-रतरमुषिवापि विषयाः 243. दृष्ट्वा च दूरतो व्याघ्रमुवास स सरस्ते PAKĀT. 1, 3, 69. दूरतम् *sich fern halten* Spr. 2237, v. l. नावसतत्र (नारमतत्र ed. Bomb.) तत्रास्य दृष्टिः MBH. 13, 1480. *sich irgendwo befinden, — sein:* स मृत्योर्वसति ऽत्तिके MBH. 12, 3515. पार्श्वतम् Spr. 404, v. l. यत्र तत्राश्रमे वसन् M. 3, 50. 12, 102. नमस्ये ऽहं पितृन् आद्वे ये वसत्यधिदेवताः MĀRK. P. 96, 13. पारिजातो वसन्तत्र HARIV. 7706. मतपः तत्रविद्याश्च मायाश्च त्र वसन्ति R. GORR. 2, 8, 44. वसति तत्राधरमधु (मुखाम्बुते) Spr. 2379. यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे । मृत्युश्च वसति क्रोधे 2438. एते (गुणाः) यत्र वसन्ति 2773. यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति VARĀH. BRH. S. 70, 23. तर-लवं नयनयोः Spr. 3983. भूतिः श्रीर्हृदिर्भूतिः कीर्तिर्दत्ति वसति नालसे 3246. स्वर्गस्थितानामिह जीवलोकं चत्वारि चिह्नानि वसन्ति देहे 5363. युगात्स-न्नासत्वे परस्परविरुद्धे नैकस्मिन्वस्तुनि वस्तुं युक्ते SARVADARÇANAS. 43, 2, 3. सेवायाम् *in Jmds Diensten stehen* Hit. ed. JOHNS. 2700. सेवाया ed. SCHL. 127, 11. *sich halten zu* (loc.) कुशासने Verz. d. Oxf. H. 20, a, No. 63. fg. — 2) *liegen —, stehen bleiben, verbleiben:* तिम्रो रात्रीः क्रीतः सेमो वसति TBH. 1, 8, 5. परिमुषितो ऽवसत् *blieb gestohlen* TS. 6, 1, 5. 5. ÇAT. BR. 9, 2, 3. कृत्वा वसति KĀTJ. ÇR. 5, 4, 1. वसन्तु नु न इदम् TS. 6, 4, 3, 1. — 3) *mit einem acc. a) in einer Lage u. s. w. sich dauernd befinden, sich widmen, obliegen:* नाब्राह्मणे गुरौ शिष्यो वासमात्यत्तिकं वसेत् M. 2, 212. कृष्टे वासमुवास क MBH. 3, 7516. चतुर्दश वने वासं वर्षाणि वसतो मम R. 2, 37, 5. R. GORR. 2, 60, 7. वनवासम् R. SCHL. 2, 75, 3. उदवासम् MBH. 13, 354. अज्ञातवासम् 3, 3020. सुखवासम् R. 1, 17, 17. बह्वुःखवा-

सम् Bhāg. P. 3, 31, 20. राजवसतिम् MBH. 4, 96. fg. 109. 120. 126. fgg. Spr. 239, v. l. ब्रह्मचर्यम् AIT. BR. 5, 14. ÇAT. BR. 12, 2, 3, 18. 14, 8, 3, 2. KĀND. UP. 4, 4, 3. 10, 1. 8, 7, 3. ब्रह्मचर्याश्रमम् MĀRK. P. 28, 17. आश्रममेष्टम् d. i. गार्हस्थ्यम् MBH. 12, 2339. वीरासनम् M. 11, 110. इदं वत्स्यामः (z. B. गार्हस्थ्यम् Comm.) ĀÇV. GRHJ. 3, 10, 2. — b) *an einem Orte verbleiben:* नदीर्वनेषु वोषित्वा VOP. 5, 3. वस तां पुरीम् R. GORR. 2, 114, 24. — c) *in der Stelle:* ब्राह्मेण विप्रान्वसति युद्धेनैव च तत्रियान् । प्रदानकर्मणा वै-श्यान् प्रूहान्परिचरेण च ॥ HARIV. 11968 ergänzt NILAK. zum acc. अग्नि-ष्टाय; dem Zusammenhange nach muss वस् hier so v. a. *sich beschäftigen lassen* (bekleiden?) bedeuten. — 4) *partic. उषित a) mit pass. Bed.:* दि-नमेकं मन्ये त्वया सार्धमिहोषितम् *zugebracht, verlegt* BRAHMA-P. in LA. (III) 56, 13. impers.: यत्रोषितं त्वया *wo du geweilt hast* MBH. 1, 3268. कारागृहे RAGH. 6, 40. Spr. 2443. 2928. — b) *mit act. Bed. = स्थितवत्* TRIK. 3, 3, 150. a) *Halt gemacht —, übernachtet —, verweilt —, sich aufgehal-*ten —, *irgendwo gelebt habend:* वेलातटेऽषितसैनिकाश्च RAGH. 18, 22. त्रिरात्रमुषितः *drei Nächte zugebracht habend* MBH. 3, 2306. एकरात्रो-षितः *keine Nacht zugebracht habend* 11945. ते त्रिरात्रोषिताः प्राप्ताः कर्षीरं पुरातनम् *nachdem sie drei Mal übernachtet hatten* HARIV. 3632. पञ्च-रात्रोषिताः पयि 3720. R. 1, 68, 1 (70, 1 GORR.). R. GORR. 1, 73, 8. 2, 12, 1. 6, 106, 1. KATHĀS. 22, 102. वर्षाकालोषित R. 4, 29, 1. शर्वरीम् — तवाश्रमे । उषिताः स्नेहवसतिम् R. SCHL. 2, 34, 36. सुखमस्युषितः MBH. 1, 3269. त्वयि 3, 1737. 2711. 3034. उषितो ऽहं त्वया सह *ich habe mit dir gelebt* (geschlechtlich) BRAHMA-P. in LA. (III) 57, 12. Bhāg. P. 1, 10, 27. सुखोषित der die Nacht gut zugebracht hat MBH. 3, 3003. R. 2, 92, 6. सुखोषितो ऽस्मि रजनीम् 5. अज्ञातवासमुषिताः MBH. 4, 1. उषितास्मि तथा बाल्ये पितुर्वेष्मनि 3, 6034. शम्बरस्य गृहोषितः HARIV. 9475. RAGH. 14, 32. MĀRK. P. 16, 20. दीर्घकालोषितस्तत्र गिरौ R. 2, 94, 1. सुचिरोषित der lange bei Jmd gelebt hat 32, 17. चिरोषित lange abwesend gewesen Bhāg. P. 1, 11, 10. 14, 39. परिसंवत्सरोषिताः *ein Jahr lang abwesend gewesen* MBH. 4, 2359. *ein Jahr lang gewartet habend* 1, 2260. 13, 4672. अयत्तरोषित seinen Standort habend KĀM. NĪTIS. 17, 28. — 3) *gestanden —, gelegen habend* (insbes. über Nacht), von Sachen: अग्निोषितं कुसुमम् VARĀH. BRH. S. 53, 95. तारे दिनापिते 30, 26. वदराणि सप्तरात्रमुषितानि 54, 114. 35, 18. वर्षद्वयमुषितानि 42, 9. SUÇA. 1, 138, 15. 2, 33, 19. शतं वत्सरानुषितं घृतम् *hundert Jahre alt* 1, 181, 16. 199, 19. चिरोषितं भक्तं पर्युषितं च MĀRK. P. 34, 57. जलोषित im Wasser gelegen SUÇA. 2, 448, 15. — 7) *gefastet habend* (vgl. unter उप): प्रुचिः पुरोधास्योषितः स्नातः VARĀH. BRH. S. 46, 15.

— caus. 1) *वासयति, ०ते; a) über Nacht behalten, Quartier geben, beherbergen, wohnen lassen; med. P. 1, 3, 89. यदेनान्वासयते यदेभ्यो ऽशनं ददाति wenn er sie beherbergt, wenn er sie speist* ÇAT. BR. 1, 7, 3, 5. MBH. 1, 5727. 3, 5972. 13, 2114. BHATT. 8, 64. वत्सान्मातृभिः सह वासयेत *die Nacht über belassen* LĪTJ. 5, 1, 2. GORR. 3, 8, 7. act.: त्वयि रात्रिं वासया-मसि *vod. Cit. beim Schol. zu P. 7, 1, 46. ब्राह्मणं मे पिता पूर्वं वासयामास beherbergen* MBH. 3, 1261. अतिथीन् 12, 4057. 3, 982. अथनावास्तिकाशौ-रान्विषये स्वे न वासयेत् 1, 5600. 4, 278. स्वगृहे 3, 7071. 13, 7416. HARIV. 8211. रामं वने वासयता *wohnen heissen* R. GORR. 2, 91, 13. संपतां वास-येद्देहे *er halte sie eingesperrt* M. 8, 365. परिभूतामधः शय्यो वासयेद्यभि-